पाठ-21

अपना स्वरूप

आइए, सीखें - ● अपने स्वभाव की कमियों को पहचानना और उत्तम स्वभाव बनाने की प्रेरणा देना। ● दुर्गुणों को त्यागकर सद्गुण ग्रहण करने के लिए प्रेरित करना। ● शब्दों के हिन्दी मानक रूप जानना। ● विपरीतार्थी शब्द, वाक्यांश के लिए एक शब्द जानना। ● विशेषण, विशेष्य की जानकारी। ● बहुवचन से एकवचन बनाना। ● पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाना।

*(**पाठ परिचय**- कहानीकार विजय गुप्ता ने इस कहानी में बहुत सरलता से यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य अपने विचारों की छाया दूसरों में देखता है। अच्छे को सब अच्छे और बुरे को सब मनुष्य बुरे ही दिखाई देते हैं। हमें अपने स्वभाव को उत्तम बनाना चाहिए, जिससे हम गुणवान बनें।)*

बहुत पुराने समय की बात है, जब न बसें चलती थीं, न रेलगाड़ियाँ थीं और न हवाई जहाज थे। उस समय ग्रामीण लोग अपनी आवश्यकताएँ गाँव से ही पूरा कर लिया करते थे। कुछ गाँव तो ऐसे थे, जहाँ के निवासी मृत्यु-पर्यन्त नगर का मुँह भी नहीं देख पाते थे।

ऐसा ही एक गाँव उत्तर प्रदेश की पहाड़ियों में था। प्राकृतिक वातावरण में झरनों का मीठा जल, शीतल पवन, खेतों का अन्न, पेड़ों के फल और गाँव में ही उत्पन्न कपास की वस्तुएँ सभी कुछ जब उस गाँव में ही सुलभ था तो फिर वहाँ के निवासी नगरों को क्यों जाते? हाँ, कभी-कभी तीर्थयात्रा के चाव से कोई बाहर निकल जाता तो आश्चर्य की बात न थी।

उस गाँव में बीरबल नामक एक किसान रहता था। उसके मन में विचार आया, ''बाहर भी घूम-फिरकर देखना चाहिए कि और स्थानों पर क्या-क्या नई वस्तुएँ हैं।'' वह एक दिन नगरों के दृश्य देखने चल दिया। अपनी थोड़ी-सी धनराशि से वह आसपास के नगरों में गया, वहाँ उसने अनेकानेक वस्तुएँ देखीं और उन्हें खरीदने की उसके मन में लालसा जागी, परन्तु वह जानता था कि उसके पास पूँजी बहुत थोड़ी है। वह बुद्धिमान था, उसने सभी वस्तुओं को अनुपयोगी समझकर कुछ भी नहीं खरीदा, परन्तु एक वस्तु ऐसी दिख गई, जिसमें आते-जाते लोगों की छाया पड़ रही थी। वह वस्तु एक दुकान के दरवाजे पर लटक रही थी। आश्चर्य से जब वह उसे देखने लगा, तो उसे अपने जैसा एक मनुष्य भी उसमें दिखाई दे गया। आश्चर्य से उसने दुकानदार से पूछा- ''भाई, इस वस्तु को क्या कहते हैं?''

दुकानदार- (बीरबल को नीचे से ऊपर तक देखकर) लगता है कि तुम किसी गाँव से आए हो?

शिक्षण-संकेत : ■ शिक्षक कहानी को हाव-भाव के साथ सुनाएँ और बच्चों से भी पढ़वाएँ। ■ बच्चों को सद्गुण ग्रहण करने की प्रेरणा दें। ■ दुर्योधन और युधिष्ठिर के विषय में कक्षा में चर्चा करते हुए कठिन शब्दों के अर्थ वाक्य प्रयोग करवाते हुए स्पष्ट करें।

बीरबल - हाँ, लाला जी! मुझे आश्चर्य हो रहा है कि इस वस्तु में इतने मनुष्य कहाँ से आ जा रहे हैं ?

दुकानदार- (हँसते हुए) भैया, इसे दर्पण कहते हैं। इसमें सामने आई हुई वस्तुओं की परछाई पड़ती है, तो वैसी ही वस्तुएँ इसमें दिखने लगती हैं। तुम इसे देखो, तुम्हारी पूरी शक्ल इसमें दिखाई देगी।

किसान ने दर्पण ले लिया और उसमें अपना आकार अच्छी प्रकार से देखा। जैसी पगड़ी किसान ने पहनी थी, जैसी पोटली उसने बगल में लटकाई हुई थी, जैसे कपड़े उसने धारण कर रखे थे और जैसी-जैसी वह अपनी आकृति बनाता था, दर्पण में सभी उसी प्रकार का दिख रहा था। उसने सोचा, - ''यह बहुत बढ़िया वस्तु है। इसे खरीद लेना चाहिए।''

किसान ने वह दर्पण और कुछ वस्तुएँ बाल-बच्चों के लिए खरीद लीं और घर की ओर चल दिया। घर में पहुँचकर उसने वह दर्पण अपने संदूक में रख दिया और पत्नी को एक सुन्दर माला और बहुत-सी वस्तुएँ भेंट देकर कहा- ''मुझे अभी किसी मित्र से मिलने जाना है। तुम यह माला पहन लो, बहुत सुन्दर सजोगी।''

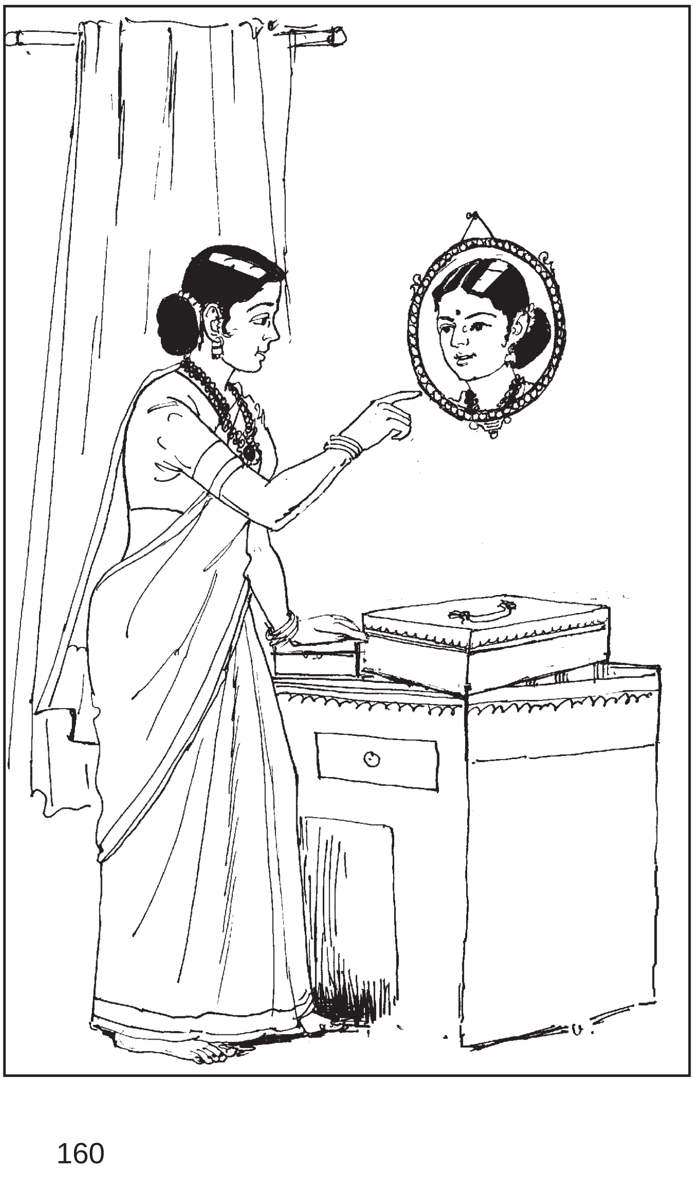

पत्नी ने माला पहन ली और घर के काम-काज में लग गई। अड़ोस-पड़ोस की स्त्रियों ने बीरबल द्वारा लाई हुई वस्तुएँ देखीं और उसकी पत्नी की माला को खूब सराहा। जब पत्नी काम-काज से निपट गई तो उसने विचार किया कि पति का सन्दूक तो देखूँ, वे अपने लिए क्या लाए हैं। उसने संदूक खोला। दर्पण को हाथ में लेते ही उसमें उसे अपनी ही आकृति दिखाई दी। वह देखकर आश्चर्यचकित हो गई। सोचने लगी- ''पति एक सुन्दर-सी नारी भी ले आये हैं, जिसने मुझ जैसी ही माला पहन रखी है। उन्होंने किसी विशेष जादू से उसे इस

वस्तु में बंद कर दिया है। मुझसे छिपाने के लिए ही उन्होंने इस संदूक में रखा होगा। कहने को तो वे कहते हैं कि तुम मुझे बहुत प्यारी लगती हो, परन्तु शहर से वे मेरी सौतन ले आए हैं।'' उसने दुखी होकर सास को पुकारा – अम्मा, अम्मा, देखो हमारे घर में वे मेरी सौतन ले आए हैं। सास ने सुना तो पास आई। पूछा– ''बहू, क्यों चिल्ला रही हो? क्या हो गया है?''

बहू ने रोते-रोते कहा– ''माँ, देखो न, मेरे पतिदेव मेरी सौतन ले आए हैं। नई नवेली बहू से इन्हें प्यार हो गया है। यह देखो चुड़ैल यहाँ बैठी है।''

सास को यह सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। आश्वासन देती हुई बोली–''मेरे रहते यहाँ तेरी सौतन कैसे आ सकती है? मुझे दिखा, वह कहाँ है?''

बहू ने दर्पण बुढ़िया के आगे कर दिया। बुढ़िया ने दर्पण देखकर कहा, ''बहू, जिस सुन्दर नई-नवेली सौतन की तू बात कर रही है, वह तो यहाँ नहीं है। यहाँ तो एक अन्य स्त्री है जो मुझे घूर रही है, जिसके बाल सफेद हैं, चेहरे पर झुर्रियाँ हैं और मुँह में एक दाँत भी नहीं। बोल मेरे लड़के को ऐसी बुढ़िया लाने में क्या रुचि हुई? मुझे तो इसमें कुछ रहस्य मालूम होता है। ''

बहू बोली। ''माँ, तुम ध्यान से क्यों नहीं देखतीं? मुझे तो नई नवेली ही दिखाई दी थी और उसके गले में मेरी माला जैसी ही माला दिखाई देती है।''

बहू और सास बातें कर रहीं थीं कि घर का बूढ़ा शोरगुल सुनकर आ गया। बूढ़े ने पूछा, ''यह शोरगुल क्यों है?'' बुढ़िया ने उत्तर दिया–''बहू कहती है कि हमारा लड़का एक सौतन लाया है। वह नई नवेली है और माला से सजी हुई है। वह स्त्री इस वस्तु में किसी जादू से आई हुई है। परन्तु जब मैंने इस जादू की वस्तु को देखा तो मुझे नई नवेली कोई दिखाई दी नहीं, एक बूढ़ी, झुर्रियोंवाले चेहरेवाली और पोपले मुँहवाली स्त्री ही दिखाई दी। अब आप ही बताएँ कि मैं ठीक कहती हूँ या बहू?''

बूढ़ा इस विचित्र पहेली को सुनकर आश्चर्य में डूब गया। बोला–''यह जादुई वस्तु मुझे भी दिखाओ। मैं देखकर बताऊँगा कि इसमें कोई नई नवेली बैठी है या बुढ़िया।''

यह कहकर बूढ़े ने दर्पण हाथ में ले लिया। दर्पण में ज्यों ही उसकी परछाई पड़ी, त्यों ही वह चिल्ला उठा– ''इसमें तो सफेद दाढ़ीवाला कोई बूढ़ा छिपा हुआ है। न यहाँ नई नवेली है और न कोई बुढ़िया।'' बहू कहती थी– इसमें मेरी सौतन बैठी है, बुढ़िया कहती थी – इसमें एक बुढ़िया बैठी है, परन्तु बूढ़ा कहता जा रहा था – ''तुम दोनो झूठ कहती हो, यहाँ न सौतन है और न ही बुढ़िया, इसमें तो एक बूढ़ा बैठा हुआ है। तुमने व्यर्थ ही शोर मचा रखा है।''

इतने में बीरबल आ गया। उसने उन तीनों को आश्चर्य में बातें करते देखकर कहा– ''यह

दर्पण है। इसमें कोई भी नहीं बैठा है, जिसकी छाया इसमें पड़ती है, उसी का प्रतिबिम्ब दिखता है। यह वस्तु आप लोगों के लिए नई है, अतः आप लोग आश्चर्यचकित हो रहे हैं।''

यह कहकर बीरबल ने दर्पण उल्टा रख दिया और बोला – ''प्यारी बहू! बताओ कि अब तुम्हारी सौतन कहाँ है? माँ, तुम बताओ कि वह बुढ़िया कहाँ है? पिताजी, अब वह बूढ़ा कहाँ है?''

बीरबल ने उन्हें समझाया कि यह अपने स्वरूप की कहानी है। जैसे दर्पण में प्रत्येक व्यक्ति को अपने जैसा ही प्रतिबिम्ब दिखाई देता है, वैसे ही लोग दूसरों में भी अपने ही गुणों की झाँकी देखने का प्रयत्न करते हैं। कहते हैं कि एक दिन दुर्योधन और युधिष्ठिर एक ही सभा में बैठे थे। दुर्योधन से किसी ने पूछा–''आपको यहाँ के लोग भले प्रतीत होते हैं या बुरे ?''

दुर्योधन ने उत्तर दिया – ''सभी लोग धूर्त और शैतान दिखाई दे रहे हैं। इनमें से तो कोई भी मुझे भला नहीं दिख रहा।'' जब यही प्रश्न युधिष्ठिर से किया गया, तो उन्होंने उत्तर दिया – ''मुझे तो यहाँ सभी भले दिखाई दे रहे हैं, बुरा तो कोई भी नहीं दीख रहा। ''

वास्तव में मनुष्य अपने विचारों की छाया ही दूसरों में देखता है। अच्छे मनुष्य को सब अच्छे ही प्रतीत होते हैं और बुरे को सब बुरे । अतः प्रयत्न यह करना चाहिए कि हम अपने स्वभाव को उत्तम बनाएँ और गुणवान बने, ताकि संसार में हमें सब अच्छे–ही–अच्छे दिखाई दें और सदा प्रसन्न रहें तथा ईर्ष्या, द्वेष और घृणा के भावों से दूर रहें।

– विजय गुप्ता

लेखक परिचय : विजय गुप्ता का जन्म 18 जुलाई सन् 1947 को हुआ था। उच्च शिक्षा प्राप्त कर आप शिक्षिका के पद पर कार्य कर रही हैं। आप एक कवयित्री भी हैं। आपका कार्यक्षेत्र दिल्ली और अम्बाला रहा है।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए –

सुलभ ---------------- आश्वासन ----------------

आकृति ---------------- रुचि ----------------

सौतन ---------------- जादुई ----------------

नई नवेली	---------------	ईर्ष्या	---------------
घृणा	----------------	प्रयत्न	----------------
चाव	----------------	लालसा	----------------

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

क. बीरबल का गाँव कहाँ बसा हुआ था?

ख. बीरबल के गाँव की क्या विशेषता थी?

ग. बीरबल को दुकान में किस वस्तु को देखकर आश्चर्य हुआ ?

घ. बीरबल की पत्नी को संदूक में कौन-सी आश्चर्य में डालने वाली वस्तु मिली?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

क. जब बहू ने दर्पण देखा तो वह व्याकुल क्यों हो गई ? उसके अनुभव अपने शब्दों में लिखिए।

ख. बुढ़िया (सास) ने और बूढ़े (ससुर) ने दर्पण में देखकर क्या कहा?

ग. बूढ़े ने ऐसा क्यों कहा, ''तुम दोनों झूठ बोल रही हो?''

घ. इस कहानी से हमें क्या प्रेरणा मिलती है? लिखिए।

प्रश्न 4. किसने, किससे कहा-

क. ''लगता है कि तुम किसी गाँव से आए हो ?''

ख. ''तुम यह सुन्दर माला पहन लो, बहुत सुन्दर सजोगी।''

ग. ''पति एक सुन्दर नारी भी ले आए हैं?''

घ. ''यह दर्पण है। इसमें कोई भी नही बैठा है, जिसकी छाया पड़ती है उसी का प्रतिबिम्ब दीखता है।''

प्रश्न 5. सही विकल्प चुनिए-

(क) --------------- ने कहा - ''सभी लोग मुझे धूर्त और शैतान दिखाई दे रहे हैं।''

(दुर्योधन, अर्जुन)

(ख) ---------- ने कहा - ''मुझे तो यहाँ सभी भले ही दिखाई दे रहे हैं।''

(दुर्योधन, युधिष्ठिर)

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखिए और इन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

सुलभ, अनुपयोगी, अनेक, सौतन, ईर्ष्या, लालसा ।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए -

पाँव, नया, किसान, बूढ़ा, बुढ़िया।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए -

सुलभ, घृणा, अनेक, उत्तम, शीतल, उल्टा।

प्रश्न 4. माला में से विशेषण विशेष्य की जोड़ी बनाकर लिखिए जैसे सुन्दर नारी-

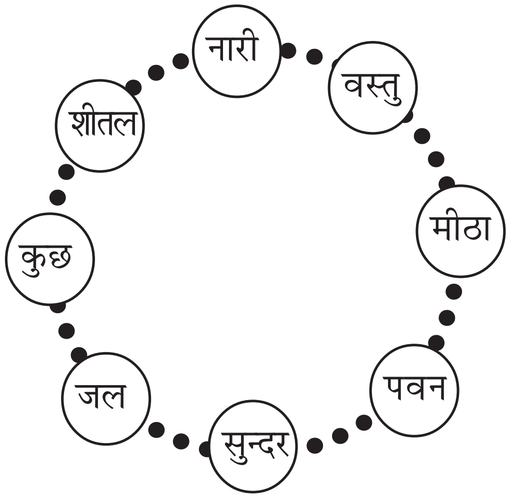

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों के एकवचन रूप लिखिए ।

रेलगाड़ियाँ	कथाएँ
पहाड़ियाँ	मालाएँ
स्त्रियाँ	वस्तुएँ
युवतियाँ	कविताएँ

प्रश्न 6. वर्ग (अ) में वाक्यांश और वर्ग (आ) में वाक्यांश के लिए एक शब्द दिया गया है। इनकी सही जोड़ी बनाइए ?

	अ.		**आ.**
क.	दुकान में सामान बेचनेवाला	-	सौतन
ख.	गाँव में रहने वाला	-	सुलभ
ग.	अपने पति की दूसरी पत्नी	-	अनुपयोगी
घ.	जिसका कोई उपयोग न हो	-	दुकानदार
ङ	आसानी से प्राप्त होने वाली	-	ग्रामीण

प्रश्न 7. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए-

क.	पति	-	----------
ख.	बूढ़ा	-	----------
ग.	युवक	-	----------
घ.	तरुण	-	----------
ङ	क्षत्रिय	-	----------
च.	पण्डित	-	----------
छ.	आत्मज	-	----------
ज.	अध्यापक	-	----------

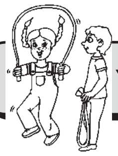

योग्यता विस्तार

1. एक ही सभा में बैठे हुए दुर्योधन और युधिष्ठिर को क्रमशः बुरे और भले लोग दिखाई क्यों दिए ? यदि आपसे उस सभा में यही प्रश्न किया जाता तो आप क्या उत्तर देते? अपने विचार कक्षा में प्रकट कीजिए।
2. इसी प्रकार की कोई और शिक्षाप्रद कहानी पढ़कर कक्षा में सुनाइए।
3. इस कहानी के पात्र का नाम बीरबल है। इतिहास में भी बीरबल अत्यन्त बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध है। अकबर के दरबार में उसका विशेष स्थान था। इस विषय पर चर्चा कीजिए।